अध्ययन 8

पवित्र आत्मा की सामर्थ

पवित्र आत्मा कौन है ?

पवित्र आत्मा परमेश्वर है । एक ही परमेश्वर है जिसके तीन भाग हैं:

परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र, (यीशु) तथा परमेश्वर पवित्र आत्मा ।

इस बात को समझने के लिये कि यह किस प्रकार सम्भव है एक सेव पर ध्यान करें । इस में छिलके, गुद्दे तथा बीज कोष (अन्तर्गत) । एक ही सेव परन्तु तीन हिस्से है पवित्र आत्मा एक, व्यक्ति है, एक शक्ति नहीं था अस्पष्ट कुहरे के समान भी नहीं । हमे पवित्र आत्मा के लिये यह (व्यक्ति) कहना चाहिए न कि यह (वस्तु) ।

"यदि तुम मुझे से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे और मैं पिता से बिनती करुंगा और वह तुम्हें एक और सहायक देगा कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे । अर्थात् सत्य का आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता है, तुम उसे जानते हो क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है और वह तुम में होगा।" (यूहन्ना 14:15–17)

हमें पवित्र आत्मा क्यों आवश्यक है ?

1. पवित्र आत्मा हमें हमारे पापी स्वभाव के विषय बताएगा तथा हमें अवगत कराएगा कि हमें परेश्वर की आवश्यकता है । (देखें यूहन्ना 16:7–11)
2. वह परमेश्वर के परिवार में जन्म लेने के लिये हमारी सहायता

करेगा । हमारी आत्मा को परमेश्वर के लिये जीवित करने के द्वारा जब हम नया जन्म पा लेते है । (देखें यूहन्ना 3:4–8, 2 कुरि0 3:6)

3. यीशु मसीह चाहता था कि उसके जाने के बाद भी उसका कार्य चलता रहे । वह मृतकों में से जी उठने के वाद अपने पिता के पास स्वर्ग चला गया । जब तक यीशु पवित्र आत्मा से स्वयं न भरा अपना कार्य पृथ्वी पर आरम्भ नहीं किया । (देखें लूका 3:21–23) उसको पवित्र आत्मा की सामर्थ से भर जाना था ताकि सब काम जिसे करने के लिये परमेश्वर ने कहा था पूरा कर सके ।

यीशु मसीह ने जिनको प्रशिक्षित किया उसके कार्य को जारी रखने के लिये उन्हें भी सेवा करने के लिये इसी सामर्थ की आवश्यकता थी । जब उन्हे ऊपर से सामर्थ नहीं मिला था उन्हें ठहरे रहना था अर्थात् पवित्र आत्मा से भर जाना था पवित्र आत्मा का वपतिस्मा पाना था । (देखें प्रेरित 1:4–5) (प्रेरित 1:8) यह पिता परमेश्वर की ओर से प्रतिज्ञा की गई थी कि यीशु अपने पिता के पास महिमा में जाने के बाद पवित्र आत्मा मेजेगा । (देखें लूका 24:46–49, यूहन्ना 16:7)

पवित्र आत्मा से भर जाना या वपतिस्मा पाना एक अनुभव है जिस के द्वारा एक विश्वासी पूर्णतः पावित्र आत्मा की अलौकिक शक्ति से भर जाता है मसीह के कार्य को पूरा करने के लिये तथा एक आत्मा से भरपूर मसीही जीवन बिताने के लिये । यह तो वास्तविक मसीही संसार से और अधिक आत्मा से भरपूर अलौकिक मसीही जीवन की ओर प्रवेशद्वार है ।

क्या सामर्थ आज भी मिल सकता है ?

पवित्र आत्मा केवल उस पीढ़ी के लोगों के लिये ही नहीं था जो यीशु के स्वर्ग पर जाने के बाद पृथ्वी पर थे । परन्तु यह तो सभी सच्चा मसीही लोगों के लिये प्रतिज्ञा की गई थी । यह सामर्थ आज भी है और उन्हे प्राप्त होता हैं जो इसके लिये प्रार्थना करते है । पवित्र आत्मा केवल हमारा उद्वार के लिये ही नहीं आता है परन्तु इसलिये कि हम परमेश्वर की सेवा और भी अधिक प्रभावपूर्ण तथा फलवंत पूर्ण तरीका से कर सकें ।

"मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने अपने पापो की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से वपतिस्मा लें, तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे । क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम और तुम्हारी सन्तानों और उन सब दूर दूर के लोगों के लिये भी है जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा ।" (प्रेरित0 2:38–39)

पवित्र आत्मा मेरे साथ क्या करेगा ?

पवित्र आत्मा किसी कार्य को करने के लिये दबाव नहीं देगा । इस से पहले कि हम परमेश्वर के राज्य के लिये नया जन्म प्राप्त करें हम कठ–पुतली के समान है जिसे शैतान चालाकी से अपने हाथों में ले रखा है । जब हम नया जन्म पा लेते हैं तो हम शैतान के हाथों से स्वतन्त्र हो जाते हैं । परमेश्वर उस डोर को जिस के द्वारा शैतान हमें चालाकी से चलाता था अपने हाथों में नहीं लेता । परन्तु वह हमें अपना पवित्र आत्मा देता है और वह हमें परमेश्वर का मार्ग दिखाता है । यदि हम उसे दिखाने दें । वह परमेश्वर के कार्य करने के लिये हम पर दबाव नहीं डालेगा । हमें स्वयं निर्णय करना है । हमें परमेश्वर के द्वारा संयमी का आत्मा दिया गया है और इसलिये हमें चुन लेना है । परमेश्वर का मार्ग या अपना मार्ग । परमेश्वर केवल हमारी अगुवाई ही नहीं परन्तु पवित्र आत्मा से भरपुर करना चाहता है तथा आत्मा की सामर्थ से भर देना चाहता है ।

हम पवित्र आत्मा से कैसे भर जाएं या बप्तिस्मा पाए ?

पवित्र आत्मा को हवा के साथ जोड़ा गया है । (देखें यूहन्ना 3:8) कोई भी हवा पर दृष्टि नहीं कर सकता या नियन्त्रण कर सकता है। परन्तु हम अपने आप को उस स्थान में रख सकते हैं जहां हम हवा का अनुभव कर सकते है जब यह बहता है । हम अपने दरवाजे एवं खिड़कियां खोल देते है ताकि हमें हवा मिले, हम यही बात अपने जीवन के साथ

कर सकते हैं जब हम पवित्र आत्मा के लिये उसे खोल देते हैं । हमें अपने जीवन के हर पहलु को परमेश्वर के लिये खोल देना चाहिए तथा समर्पित कर देना चाहिए और यीशु को अपना प्रभु करके स्वीकार करना चाहिए ताकि पवित्र आत्मा से भर जाएं । परमेश्वर का आत्मा नहीं आएगा यदि हम उसको नहीं चाहते हैं या उसके लिये प्रार्थना नहीं करते हैं या जहां पाप बना रहता है ।

यीशु ने कहा ,

"यदि कोई पियास हो तो मेरे पास आकर पीए । जो मुझ पर विश्वास करता है जैसा पवित्र शास्त्र में आया है उसके हदय में से जीवन के जल की नदियां बह निकलेगी, उस ने यह वचन उस आत्मा के विषय में कहा जिसे उस पर विश्वास करने वाले पाने पर थे क्योंकि आत्मा अब तक न उतरा था क्योंकि यीशु अब तक अपनी महिमा को न पहुंचा था ।" (यूहन्ना 7:37–39)

यीशु ने यह भी कहा

"मागों तो तुम्हें दिया जाएगा, दूढ़ो तो तुम पाओगे, खटखटाओ तो तुम्हारे लिये खोला जाएगा । क्योंकि जो कोई मांगता है उसे मिलता है और जो ढूँढ़ता है वह पाता है, और जो खटखटाता है उसके लिये खोला जाऐगा । तुम में से ऐसा कौन पिता होगा कि जब उसका पुत्र रोटी मांगे, तो उसे पत्थर दे; या मछली मांगें तो, मछली के बदले में सांप दे ? या अण्डा मांगे तो उसे बिच्छु दे ? सो जब तुम बुरे होकर अपने लड़के वालों को अच्छी वस्तुए देना जानते हो तो स्वर्गीय पिता अपने मांगने बालों को पवित्र आत्मा क्यों न देगा ।"

(लूका 11:9–13)

अन्य भाषा क्या है ?

जब आप पवित्र आत्मा से भर जाते हैं तो साधारणतःआप अन्य अन्य भाषा बोलने लगते हैं (इसी को अर्थ भाषा कहते हैं) इसे आप ने नहीं सीखा है। इस के लिये डरने की कोई बात नहीं है । यह पवित्र आत्मा

है जो आप के द्वारा परमेश्वर से बातें करता है । जब आप अन्य भाषा में बोलते हैं तो बाइबल बताती है कि आप अपनी उन्नति करते हैं । (देखें कुरिन्थियों 14:1–5)

क्या आप पवित्र आत्मा से एक ही बार परिपूर्ण हुए है ?

पौलुस प्रेरित ने लिखा है 'आत्मा से परिपूर्ण होते जाओं' (इफिसियों 5:18) जिस काल का वह प्रयोग करता है उसका अर्थ है वर्तमान काल से लेकर आगें को भी पवित्र आत्मा से भरपुर होते जाना हैं यह लगातार, प्रतिदिन हमेशा ताजगी होना चाहिए । हमारा जीवन नित्य परमेश्वर के आत्मा के लिये खुला रहना चाहिए ।

पवित्र आत्मा हमारे लिये क्या करता है ?

वह हमें देता है :–

1. यीशु मसीह के तथा परमेश्वर के राज्य के होने के लिये हमें सामर्थ देता है । (देखें युहन्ना 3:5–8, रोमियों 8:9,16,17)
2. जैसे यीशु मसीह चाहता है वैसे जीवन बिताने के लिये सामर्थ देता है । (देखें इफिसियों 3:16, रोमियों 8:11,14)
3. परमेश्वर के गवाह बनने में सामर्थ देता है । (देखें प्रेरित 1:8, 1 कुरिन्थियों 2:4–5)
4. परमेश्वर और उसके मार्गों को समझने की सामर्थ । (देखें इफिसियों 1:17–21, 1 कुरिन्थियों 2:9–16, यूहन्ना 16:13–15)
5. परमेश्वर से प्रार्थना करने की सामर्थ । (रोमियों 3:26–27)
6. परमेश्वर के साथ तथा दूसरे मसीही लोगों के साथ संगति करने की सामर्थ । (फिलिप्पियों 2:1–2)
7. हमारे पुराने पापमय स्वभाव पर विजय पाने, पाप, मृत्यु शैतान तथा

संसार पर विजय पाने की सामर्थ । (देखें 2 कुरिन्थियों 3:17, 1 यूहन्ना 4:14, रोमियों 8:2, गलतियों 5:16)

8. प्रेम और आशा के लिये सामर्थ । (रोमियों 5:5;15:13)

प्रश्न तथा संकेत :–

1. कौन आप को पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा और भरपूर करेगा ? (मरकुस 1:7,8)
2. पवित्र आत्मा हमारे लिये कौन कौन से काम करता है ? (यूहन्ना 14:26, 16:3)
3. पिता के प्रतिभा को प्राप्त करने का क्या प्रतिफल होगा ? (प्रेरित 1:8)
4. पवित्र आत्मा रहने के लिये कौन सा स्थान चुन लेता है ? (1 कुरिन्थियों 3:16) तथा उसके परिणाम स्वरूप हमें कैसे रहना चाहिए ? (1 कुरिन्थियों 6:19–20)
5. पवित्र आत्मा का नौ वरदान क्या क्या है ? तथा कौन निर्णय करता है कि हर एक को कौन कौन सा वरदान मिलेगा ? (1 कुरिन्थियों 12:8–11)
6. किसको आत्मा का वरदान दिया जाता है तथा उसका क्या उद्देश्य है ? (1 कुरिन्थियों 12:7)
7. पवित्र आत्मा का नौ फल क्या क्या है ? (गलतियों 5:22,23)
8. किस प्रकार के भजन करने वाले को पिता ढूँढ़ता है ? (यूहन्ना 4:23–24)
9. पढ़े गलतियों 5:16–18,25 तथा निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें–
   क. क्या पापमय स्वभाव की अभिलाषाएँ तथा पवित्र आत्मा हमें एक ही दिशा में ले जाते है ?
   ख. हम किस के द्वारा आगवाई पाएं ?
10. कौन कौन सी तीन बातें है जिन के द्वारा हम पवित्र आत्मा को रोकते हैं ? (1 थिस्सलुनीकियों 5:19, इफिसियों 4:30, प्रेरित 7:50)

प्रार्थना :–

सर्व–शक्तिमान परमेश्वर मैं तुझे तेरे बहुमूल्य दान पवित्र आत्मा के लिये धन्यवाद देता हूँ । मैं देखता हूँ कि मुझे तेरे वरदान से भरपूर होने की आवश्यकता है । मैं तुझ से प्रार्थना करता हूँ कि मेरा कोई भी पाप जो तेरे विरुध है क्षमा कर दे और मैं इसके लिये आप को धन्यवाद देता हूँ। मैं अपना जीवन नई रीति से तुझे सौपंता हूँ । मैं तुझ से प्रार्थना करता हूँ कि मुझे अपना पवित्र आत्मा से भर दे ताकि जो कार्य तू मुझ से चाहता है उसको पूरा करने की सामर्थ मुझ मिले । धन्यवाद प्रभु कि तू ने पवित्र आत्मा देने की प्रतिज्ञा किया जितने लोग इस रीति से तुझ से मांगते हैं । मैं यह प्रार्थना यीशु के नाम से करता हूँ । आमीन ।